Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

वैदिक ज्योति

वर्ष १४ फरवरी २०११

आर्य सेवा संघ., महू

महर्षि दयानन्द सरस्वती

27 फरवरी जन्मोत्सव पर बधाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर –
विगत 5000 वर्षों के इतिहास में अद्वितिय व्यक्तित्व के धनी "महर्षि दयानन्द सरस्वती" –प्रकाश आर्य, महू

संसार में अनेक महापुरूष हुए अनेक विचार धाराएं उनके माध्यम से प्रस्फुटित हुई और उनमें से कई महापुरूषों ने जो सन्देश दिया उस आधार पर मत–मतान्तरों, मजहबों की स्थापना हुई। किन्तु महर्षि का स्थान एक अलग है। योगीराज अरविन्द ने महर्षि दयानन्द के प्रति महर्षि की विद्वता, कार्य और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लिखा है कि संसार के महापुरूषों को पर्वत श्रृंखला माने जावे तो महर्षि की तुलना उसमें सर्वोच्च शिखर से करनी चाहिए।

महर्षि के संबंध में जहां उनके प्रति असंख्य व्यक्तियों ने भाव व्यक्त करते हुए उन्हें असमान्य व्यक्तित्व का धनी, एक निर्भीक, निश्छल सन्यासी, समाज के दुःख से कराहती आत्मा और स्वतन्त्रता के प्रति हृदय में धधकती ज्वाला माना, वहीं संसार के इतिहास में यह भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना है कि इस व्यक्तित्व को मिटाने के लिए 16 बार प्राणघातक प्रयास हुए। किन्तु विचारों में हिमालय सी दृढ़ता लिए हुए ये महापुरूष उन सब चुनौतियों को स्वीकार करते और बाधाओं को कुचलते हुए निरन्तर बढ़ता रहा।

अद्वितीय महापुरूष इसलिए कहा उसका मुख्य कारण यह भी है कि संसार के प्रायः जितने भी महापुरूष हुए उन्होंने समाज सुधारक, राष्ट्रभक्त या आध्यात्म में से किसी एक के कारण अपनी पहचान बनाई। किन्तु इतिहास के पन्नों में महर्षि दयानन्द सा कोई दूसरा महापुरूष दृष्टिगोचर नहीं होता है जिसने समाज राष्ट्र संस्कृति और सनातन विचारधारा सभी के लिए समान रूप से कार्य कर अपना स्थान बनाया हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

जीवन के किसी भी पहलु पेर दृष्टि डालो चाहे उसका संबंध धर्म, संस्कृति अथवा ईश्वर से हो, व्यक्ति, परिवार व समाज निर्माण का हो, शिक्षा का हो, स्वास्थ्य का हो, मूक प्राणियों का हो, देश को एक सूत्र में बान्धने के लिए भाषा का हो, कुरीतियों से मानव को मुक्ति दिलाने का हो, स्वध र्म और स्वसंस्कृति के महत्व के प्रति हो, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां महर्षि ने अपने प्रयासों से समाज को दिशा निर्देश नहीं किया हो।

महर्षि दयानन्द के विचारों का ही प्रभाव था जिससे स्वामी श्रद्धानन्द, पं0 लेखराम, विद्यार्थी गुरूदत्त, भाई महावीर, शहीदे आजम भगतसिंह और वीर सावरकर, मदनलाल ढ़ींगरा, मेडम कामा, दादा भाई नोरेजी के निर्माता क्रान्तिकारी श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा जैसी महान विभूतियां इस देश को मिल सकीं। यह भी अपने आप में महर्षि के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। जीवन की पवित्रता और पक्षपात रहित उच्च आदर्शों में महर्षि के समकक्ष कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। एक बार पौराणिकों से आर्य समाजियों के विवाद में जब आर्य समाजी पक्ष ने अपने समर्थन में महर्षि को साक्ष्य देने का कहा तो महर्षि का उत्तर अत्यन्त महत्वपूर्ण था। महर्षि ने कहा कि मैं जो सत्य है वही कहूंगा और सत्य यह है कि इस समय आर्य समाजियों की त्रुटि थी।

महर्षि का जीवन एक खुली पुस्तक था तथा अपने लिए शारीरिक और आत्मिक उन्नति हेतु योग साधना, संयम, स्वाध्याय के अतिरिक्त जीवन का प्रत्येक क्षण समाज के लिए था। जिस प्रकार संसार की सब विद्याओं का भण्डार वेद है। उसी का लघु दर्शन अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश से होता है जिसमें महर्षि ने मानव जीवन के सर्वांगीण विकास और सत्य को उल्लेखित कर मानव जाति को ज्ञानामृत दिया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस प्रकार हम ईश्वर को सत्य, निर्मल, पवित्र, दयालु, न्यायकारी आदि गुणों से संबोधित करते है महर्षि दयानन्द के जीवन में भी उनके कार्य क्षेत्र में उतरने के पश्चात ऐसा कोई कार्य नहीं दिखाई देता जो उपरोक्त वर्णित गुणों में हमें महर्षि के जीवन में नहीं मिलता है। क्योंकि वे ईश्वर के सच्चे उपासक थे, सच्चे भक्त थे।

अपने को जहर देने वाले व्यक्ति को कारागार में भेजने के स्थान पर यह कहकर की मैं तो समाज मुक्त कराने आया हूं और तहसीलदार से उसे छोड़ने को कहा, अपने को नित्य गाली देने वाले साधु के पास प्राप्त फलों का टोकरा पहुंचाकर उसके दुष्ट आचरण को क्षमा करने वाले व अपने प्राण लेने वाले जगन्नाथ को पास से पैसा देकर दूर भाग जाने व प्राण रक्षा करने की सलाह देने वाली ऐसी अनेक घटनाऐं व उदाहरण हैं जिनसे दया के सागर दयानन्द का अनोखा व्यक्तित्व हमारे सामने आता है।

समाज की मान्यता के अनुसार सर्वोच्च ब्राह्मण जाति में जन्म लेने पर भी ब्राह्मण जाति को भी मार्ग दिखाया तथा जन्म से पारिवारिक वेश के कारण ब्राह्मण न मानते हुए गुण कर्म को महत्व दिया। दूसरी ओर जाति व्यवस्था के अनुसार उपेक्षित निम्न दृष्टिकोण से देखी जाने वाली जातियों और तथाकथित शुद्रो को भी समाज में समान अधिकार और शुद्र से ब्राह्मण बनने का पथ दिखाकर महर्षि ने समाज पर एक बहुत बड़ा उपकार किया है। अन्यथा अनेकों कारणों से बंटा हुआ जातिप्रथा के अभिशाप से ग्रस्त यह समाज और छिन्न–भिन्न हो जाता और इसका अधिक नुकसान सनातन धर्म को ही होता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि का सोच संकुचित नहीं था, उनके हृदय की विशालता में मानव मात्र सम्पूर्ण संसार के उत्थान का भाव था इसलिए उन्होंने वेद के उस वाक्य को महत्व देते हुए आर्य समाज को **कृण्वन्तों विश्वमार्यम्** का सन्देश दिया। आर्य समाज का उद्देश्य समस्त संसार को श्रेष्ठ बनाना बताया। जीवन में अनेक प्रलोभनों को ठुकराते हुए, सुख–सुविधाओं को ठुकराते हुए सत्य पर आधारित कंटकाकीर्ण मार्ग पर ही चलना स्वीकार किया। राजा–महाराजा से सम्पर्क का कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं उठाया। यहां तक कि उनके द्वारा सुरक्षा हेतु व्यवस्था करने का आग्रह करने पर भी महर्षि ने उसे स्वीकार नहीं किया। आत्मबल के धनी अदभुत उत्साह की पराकाष्ठा का संसार का अद्वितिय उदाहरण है लाखों व्यक्तियों के मध्य लाखों करोड़ों की मान्यता के विपरीत एक नई बात कहते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका हरिद्वार कुम्भ के मेले में फहराते हुए शास्त्रार्थ की चुनौति देने का कार्य किया जो विश्व की आश्चर्यजनक व अद्वितिय घटना है।

संसार के महापुरूषों और दयानन्द के जीवन में एक मौलिक अन्तर पाया जाता है संसार के अधिकांश महापुरूषों ने कुरीतियों, दुर्व्यसनों और पाखण्ड का इतना सख्त विरोध नहीं किया जितना महर्षि ने खुलकर किया। महर्षि अपनी लोकप्रियता या स्वयं को समाज में बहुत उंचा स्थान प्राप्त करवाने के लिए कार्यक्षेत्र में नहीं उतरे थे। महर्षि तो सत्य को सत्य कहने और असत्य को असत्य कहने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। इसी कारण अन्धकार से घिरे हुए अनेक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और सत्य का मण्डन करने में ही अपना पूरा पुरूषार्थ अन्त तक लगाते रहे, यह महर्षि की सबसे बड़ी विशेषता थी।

असत्याचरण का यदि खण्डन नहीं करते तो भक्त अमीचन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक महाधन इस समाज को कहां से मिलते ? बरेली में अपने ठहरने की व सारी व्याख्यान की व्यवस्था करने वाले खजांची को और जोधपुर के महाराजा को उनकी चारित्रिक गलती बताकर स्पष्टता का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले महर्षि को अद्वितिय इसीलिए माना जाता है। सत्य के सामने चाहे राजा हो या रंक हो अपना सन्यासी धर्म जो सत्य पर निर्भर था वह निभाया। ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारियों की बैठक में उनके ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति दीर्घायु की प्रार्थना करने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर स्वदेश के स्वतंत्रता की प्रार्थना प्रभु से करना बताना अपने आप में एक राष्ट्र भक्ति के प्रति उत्कृष्ट भावना व अदम्य साहस था। यह प्रमाण अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिल सकता।

संसार के अनेक महापुरूश, विचारक, महर्षि के ज्ञान, स्वाध्याय व विशाल अध्ययन को ईश्वरीय चमत्कार ही मानकर सन्तोष करते हैं। अपने अल्प जीवन में तीन हजार से भी अधिक ग्रंथों का सूक्ष्मता से अध्ययन और उनको पढ़कर सत्य–असत्य का निर्णय करना कोई साधारण बात नहीं। ज्ञान का प्रत्यक्ष उदाहरण सत्यार्थ प्रकाश है जो मात्र साढ़े तीन माह में जिसकी रचना हो गई। जिसमें मानव जीवन से संबंधित लगभग सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया। पुस्तक में 377 ग्रंथों का हवाला तथा इनमें से 290

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुस्तकों में कहां क्या लिखा है इसे प्रकाशित करना, उन पर विचार व्यक्त करना, उनकी वेदानुकूलता या प्रतिकूलता पर टिप्पणी। यह असाधारण बात नहीं है, मानवीय इतिहास की आश्चर्यजनक व महत्वपूर्ण बात है।

एक ऐसी कृति जिससे प्रभावित होकर वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, दादा भाई नौरोजी, पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, विद्यार्थी गुरूदत्त आदि अनेक के जीवन ही बदल गये।

प्रायः संसार के सभी व्यक्तियों ने कहा आगे देखो महर्षि ने नारा दिया "वेदों की ओर लोटो" चाहते तो महर्षि अपने द्वारा प्रतिपादित एक विचारधारा प्रारंभ कर सकते थे। किन्तु ईश्वरीय सनातन ज्ञान के रहते कुछ और बताना उचित नहीं समझा। इसीलिए वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना परम धर्म बताया।

आर्य समाज की स्थापना अनेक गणमान्य महापुरूषों के आग्रह पर की। उस समय दो प्रमुख बातें महर्षि की दूर दर्शिता और महानता का उदाहरण हैं महर्षि ने कहा आपके कहने से आर्य समाज की स्थापना तो हो रही है परन्तु ये भी एक सम्प्रदाय न बन जावे। दूसरी बात कही कि जो कुछ मैंने बताया कालान्तर में वही सत्य है, ऐसा मानकर "बाबा वाक्यं प्रंमाणम्" को चरितार्थ मत करना। युक्ति युक्त सत्य व धर्मानुसार की बात को स्वीकार कर लेना। इसीलिए महर्षि ने आर्य समाज के नियमों में सत्य को स्वीकार करने व असत्य को त्यागने में सदा तत्पर रहने का मार्ग दिखाया।

हम सब आर्यजन महर्षि के बताए हुए मार्ग पर चलें यही हमारी गुरू के प्रति सदभावना होगी। **इस अवसर पर सबको बधाई।**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

ये राजनीति

ये राजनीति भी बड़ी अजीब है, जाने क्या–क्या करवाती है।
छोटे से पौधे को झाड़ और राई को पहाड़ बनाती है।।

गम हो या खुशी हर हाल में स्वार्थ देखती है।
जब जहां मौका मिले, अपनी रोटी सेंकती है।।

अंग्रेजों की नीति अपनाकर, फूट सबमें डालती है।
अपनों को डसवाने हेतु, विषधर घर में पालती है।।

भाषा, सीमा, जाति, सम्प्रदाय, इसके खास मोहरे हैं।
मंहगाई घटे या बढ़े, मापदण्ड सदा दोहरे हैं।।

पल में दूरी, पल में दोस्ती, चाहे जब जताती है।
घूड़े के दिन बदलते कैसे, ये राजनीति सिखाती है।।

इस युग में सबसे पावरफूल, और असरदार है।
साधु–सन्त, नेता–अभिनेता सभी आते द्वार हें।।

हर काम में इसका महत्व बढ़ा है।
जिधर देखो उद्घाटन में, नेता ही खड़ा है।।

नैतिकता को कुचलकर, स्वार्थ मन्त्र देती है।
मौका मिल जाये तो, सारा देश ही खेती है।।

इसलिए स्वच्छन्द सांड बन, खेतों को उजाड़ रहे।
सारा तन्त्र इनका ही है, जाकर दुखड़ा किससे कहें।।

करोड़ों परेशान जिन्दगी, कहर से इनके कराह रही।
ये बदनाम, डायिन फिर भी खुद को सराह रही।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिशा विहीन बेकाबू वाहन सी, बढ़ रही इसकी रफ्तार।
मजबूरी है होना पड़ रहा, इस वाहन में ही सबको सवांर।।
अनगिने छिपे हैं राज, तभी यह राजनीति कहलाती।
बकरी के सिर पर ये चाहे तो, भैंस के सींग लगाती।।
पर प्रवाह इसका और बढ़ता गया।
जन मानस का हौंसला ढहता गया।
तो सुनामी सी कहर ढायेगी।
अपने ही घर में सबको, बन्धक बनायेगी।
चन्द हाथों में गिरफ्त होगी आजादी,
बनकर रह गया गर, देश भाग्यवादी।
तो फिर इसके बदचलन चरित्र को नकार दो,
बिगड़े हुए स्वरूप को फिर से संवार दो।
कुर्सी के, पार्टी के, इर्द गिर्द घुमना छोड़कर,
राजनीति के नाम पर, चादर मतलब की ओढ़कर।
जो राजनीति में आते हैं,
भेड़िए बन कर पुजाते हैं।
उनको समझों और समझा दो।
राजनीति राष्ट्रनीति है, ये बता दो।
तब ही राजनीति स्वच्छ व पवित्र बन पायेगी।
फिर यह अभिशाप नहीं, कल्याणी बन जाएगी।

– प्रकाश आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाराजा को प्रसन्न करूं अथवा ईश्वर को ?

लाहौर प्रवास के समय स्वामीजी ईश्वर के सत्य स्वरूप का मण्डन करते हुए मूर्ति पूजा को अवैदिक बता रहे थे। तभी लाहौर कें पण्डित मनफूलजी ने कहा कि मूर्तिपूजा के संबंध में आप ऐसा न कहक तो अच्छा है इससे नगर के लोग रूश्ट हो जाएंगें और महाराज भी आपसे बहुत प्रसन्न होगें। इस पर स्वामीजी ने भर्तृहरि का प्रसिद्ध श्लोक बोलते हुए कहा –

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेश्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

अर्थात् संसार के लोग भले ही निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन–सम्पदा प्राप्त हो अथवा चली जावे। मृत्यु अभी हो जावे अथवा एक युग तक जीना हो धीर पुरूष सत्य मार्ग से कभी भी पीछे नहीं हटते।

यह श्लोक सुनाकर कहा "महाराज, जम्मू–कश्मीर को प्रसन्न करूं अथवा ईश्वर की आज्ञा का जो वेद में है–उसका पालन करूॅ ?"

महापुरूषों की दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती

0 महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्वप्रथत व्यक्ति थे जिन्होंने भारत भारतीयों के लिये का उदघोष किया था और इसलिए जब भारत माता का स्वराज्य मन्दिर स्थापित किया जायेगा तो उसमें सर्वोच्च स्थान महर्षि दयानन्द को दिया जायेगा।

– श्रीमती एनी बेसेन्ट

0 स्वामी दयानन्द जी एक बहुत बड़े समाज सुधारक थे, देश प्रेम के लिये उन्होंने घर त्याग दिया। ऐसे व्यक्तित्व का कोई भी व्यक्ति अपमान करेगा तो मैं उसे पाप समझूंगा।

– महात्मा गांधी

0 स्वामी मेरे गुरू हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरू माना है वे मेरे धर्म पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म माता है। इन दोनों की गोदी में मैं पला। इस बात का मुझे गर्व है कि मेरे गुरू ने मुझे स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया।

– पंजाब केशरी लाला लाजपत राय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

गतांक से आगे :–

धर्म से ही दोनों लोको की सिद्धी होती है

प्रिय सुधी पाठकगण ! इसके पूर्व आपने पहले अंक में पढ़ा कि धर्म से हमें सुख की प्राप्ति होती है। धर्म ही सुख का आधार है, दूसरे अंक में पढ़ा धर्म से ही हम सुरक्षित रह सकते हैं। हमारी सुरक्षा केवल धर्म से ही हो सकती है, धर्म ही हमें पतित होने से बचा सकता है। इस तीसरे अंक में पढ़ेगें धर्म दोनों लोकों की सिद्धि का आधार है:–

वर्तमान में प्राप्त मनुष्य जीवन की प्राप्ति में इस जीवन का कोई सहयोग नहीं है, इसकी प्राप्ति के लिए पूर्व जन्म के संस्कारों, शुभ कर्मों का योगदान ही इसका आधार है। सत्य कर्म, शुभ कर्मों का संचित परिणाम ही हमने प्राप्त किया है उन्हीं कर्मों के आधार पर जाति, आयु और भोग की प्राप्ति होती है। यह योगदर्शन में बाताते हुए लिखा–**"सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः"।**

पूर्व जन्म के शुभ कर्मों से मानव जीवन प्राप्त होकर हमें कर्मों की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। हमारी यह योनि भोग योनी और कर्म भी रही है। अन्य योनियों में कर्म स्वतन्त्रता न होने से वे केवल भोग योनि कही जाती है।

मानव जीवन की श्रेष्ठता व उद्देश्य वर्तमान में उसे प्राप्त सुख साधन जीवन तक सीमित नहीं है। मानव जीवन इस जीवन की श्रेष्ठता के साथ आगामी जीवन को भी तथा व्यवस्थित करने उसे सुरक्षित करने का माध्यम है।

यही एक मौलिक अन्तर पशु, पक्षी अन्य योनियों में तथा मनुष्य योनि के मध्य है। मनुष्य को छोड़ संसार का प्रत्येक प्राणी भोग से ऊपर कुछ नहीं समझता। एक पशु अपने लिए भोजन, विश्राम और सन्तानोत्पत्ति में ही जीवन बीता देता है। उसे सत्य, असत्य हिंसा, अहिंसा, सहयोग, आस्तिक, नास्तिक आदि जैसी बातों से कोई सम्बन्ध नहीं। क्योंकि वह इनके बारे में न तो समझता है और न उसके लाभ–हानि से परीचित है।

उसको जो आँखों से दिखाई देता है, वह इन चर्म चक्षुओं से देख कर जो अपने भोग्य पदार्थ वह समझता है, वही उसके जीवन के लिए पर्याप्त और उसे सुख प्रदान करने वाला है, उसके जीवन का सोच यहीं तक सीमित है। इसीलिए कहा "पश्यति स पशुः"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु मनुष्य अनेक प्रकार के शुभ कर्मों को करते हुए इस योनि तक पहुंचा है। उसी क्रम में जीवन में और शुभ करके अपने को देवता और भगवान तुल्य कहला सकता है, यह उसको सुविधा प्राप्त है, इस जीवन को सुखमय बनाकर, आनन्द और सन्तोष के खजाने को प्राप्त कर सकता है।

निश्चित रूप से जैसा कि पूर्व में पढ़ा शुभकर्म, सत्यकर्म, निष्काम कर्म ही धर्म पथ है। इस पथ पर चलने वाले पथिक को उसकी यात्रा में सरलता, सुलभता व सुगमता होती। वह इस माध्यम से आराम से बिना खतरों के यात्रा पूरी कर मंजिल को पा लेता है।

क्योंकि धर्म का फल पुण्य और पुण्य का फल सुख है। इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। धर्म पथ पर चलते हुए ही मनुष्य अपना आत्मिक विकास कर जितेद्रिय बन सकता है। जिसका परिणाम, सुख, शान्ति, आनन्द है। इसलिए कहा **"मनुष्यस्य मूलम् सुखम्"** मनुष्य जीवन का उद्देश्य सुख है जिसे व धर्म पथ से ही प्राप्त कर सकते है।

किन्तु यदि इसी जीवन की सुख शान्ति तक सीमित रह गया तो मानव व अन्य योनियों के मध्य कोई विशेष अन्तर नहीं रह जायेगा। दोनों के मध्य का अन्तर शारीरिक रचना व जीवन साधनों की भिन्नता ही मुख्य रूप से रह जावेगी।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य उस लोक अर्थात् जो आगे प्राप्त होना है, अपने कर्मों के अनुसार जो हमें प्राप्त होना है, उसे व्यवस्थित करना है। अपने जीवन में हम यात्रा करते हैं उन यात्रियों को सुविधा होती है जो वाहन का किराया पूर्व में जमा करके अपना आरक्षण करवा कर सीट सुरक्षित करवा लेते हैं, ऐसे यात्रियों की भावी यात्रा सुरक्षित, आरामदायक व निश्चिन्तता युक्त होती है। हम अपनी जीवन यात्रा में शुभ कर्म, धर्माचरण करके इसी प्रकार भावी जीवन के लिए अपना स्थान सुरक्षित कर लेवें उसे प्राप्त करने के लिए जो शुल्क धर्म का है, वह चुकावें, तो हमारा वह लोक भी सुरक्षित हो सकेगा।

उसकी प्राप्ति होना फिर निश्चित ही है इसलिए ऋषि कणाद लिखते हैं, **यतोऽभ्युदय निश्रेयस् सिद्धिः स धर्मः**, एकमात्र धर्म ही लौकिक और परलौकिक प्राप्ति का साधन है।

धन, सम्पत्ति, पद, परिवार, सिफारिश का सम्बन्ध इस लोक तक ही संभव है, उसे उस लोक में यह सबकुछ नहीं चलता। जैसे विभिन्न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देशों ने अपनी–अपनी मुद्राएं अपने अनुसार निश्चित की है, रूपया, डालर, यूरों आदि, अनेक प्रकार की मुद्राएं चलती है। जिस देश में जो मुद्रा चलती है, उसका उपयोग वहां तक किया जा सकता है, भारत का रूपया जापान, अमेरिका या स्वीट्जरलैण्ड में नहीं चलता वहां के लिए अलग मुद्रा होगी जो वहां चलती हो।

ठीक इसी प्रकार ये भौतिक धन सम्पत्ति रूपी मुद्रा इस जीवन तक ही है, वहां परलोक के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं। वहां की यात्रा सुखमय करनी है तो धर्म का आचरण करके ही की जा सकती है। आगे की यात्रा का साथी धर्म ही है। इस बात को नीतिकार ने कुछ ऐसे कहा–

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारि गृहद्वारि जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः।।

अर्थात्– ए मनुष्य जब तू अपनी देह का त्याग करेगा उस समय तेरा धन सम्पत्ति सब यही रह जाने वाले है, पशु वहीं रह जावेंगे, जहां वे बन्धे हैं, जिसे तू अपनी अर्धांगिनी (पत्नि) कहता है वह भी तेरा साथ घर के द्वार तक ही देगी। तेरे बाल सखा मित्र जो तेरे सुख, दुःख में साथ रहे वह भी श्मशान तक ही तेरा शरीर साथ देगें, फिर तू अकेला रह जायेगा, और जिस शरीर को तू अपना कहता है यह भी चिता तक ही साथ देगें फिर तू अकेला ही रह जावेगा।

सोच तेरे साथ फिर क्या जावेगा ? नीतिकार ने कहा फिर तो तेरे साथ सिर्फ धर्म अर्थात् तेरे द्वारा किए गए कर्म ही परलोक के साथी रहेगें।

इसलिए यह लोक और परलोक को सुधारने का एकमात्र मार्ग धर्म बताया है। इससे ही दोनों लोकों की सद्गति है, इस पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए।

भौतिकवाद के प्रभाव में ग्रस्त समाज वर्तमान को ही सबकुछ समझकर चार्वाक के सिद्धान्तों पर चल रहा हैं, जिसमें इस जीवन को ही मान्यता देते हुए पुर्नजन्म को नहीं होना बताया। इसी भावना से प्रभावित होकर उसने जितना हो सके इस जीवन को सुखी व इच्छाओं को तृप्त करने को ही जीवन की सफलता बताया। इसलिए जीवन को सुखी रखने के लिए ऋण उधार लेकर भी जीने व सुखी रहने की सलाह उसने दी है।

परन्तु यह हमारे सनातन विचारों के विपरीत है। पुर्नजन्म तो अवश्य ही होना है, किस योनि में किन भोगों के लिए होना है यह हमारे कर्मों पर निर्भर करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किन्तु यहां यह भी ध्यान रखें कि धर्म पथ पर चलने से दोनों लोको की प्राप्ति होती है, उनमें से यह लोक भी हमारा श्रेष्ठ होता है। अध्यात्म से सात्विक विचारों की वृद्धि होती है, ये विचार कल्याण कारी विचार है। इसका लाभ हमें स्वयं को तो होता ही है, दूसरे भी इससे लाभान्वित होते है। शुभ कार्य करने वाले मनूष्य के मन में निर्भयता रहती है और राग द्वेष जैसे दुःख के कारणों से वह बचा रहता है, और उसका अन्त भी शान्ति के साथ होता है।

परलोक के संबन्ध में समाज ने अज्ञानतावश बड़ा आसान तरीका ढूंढ निकाला है जिसमें कर्म से कोई संबन्ध नहीं है। मृत्यु के समय जब जीव शरीर से बाहर निकलने के लिए छटपटा रहा है, बैचेनी बढ़ती जा रही है, धीरे–धीरे सारी इन्द्रियां शिथिल होकर काम करना बन्द कर रही है, आँखों ने पहचानने से, कानों ने सुनने से मनाकर दिया उस समय ग्रन्थों का पाठ उसे सुनाया जाता है, गंगाजल तुलसी मुंह में दे दी जाती है, ऐसा करके हम जीव का परलोक सुधार देते हैं ऐसी मान्यता है। मृत्यु के पश्चात् बहुत बड़ी संख्या में समाज को बुलाकर मृत्युभोज करवाकर समाज में वाहवाही लूटकर इस भोज से जीव (मृतक) का परलोक सुधारने का प्रयास करते हैं, पिण्डदान, शय्यादान, मृतक की अस्थियों को नदियों में प्रवाहित कर परलोक सुधारने का यत्न करते हैं। इस अज्ञानता पर कई स्वार्थ मतलब परस्त लोभी जीवात्मा का परलोक सुधर गया ऐसी अज्ञानता की पुष्टि करते देखे जा सकते हैं।

यदि ऐसा होने लगे तो अर्थ से सम्पन्न हर व्यक्ति का परलोक सुधर जावेगा उसकी सन्ताने थोड़ा धन खर्च कर मृतक का परलोक सुधार देगें। फिर कर्म व्यवस्था निरर्थक हो जावेगी कर्मों के अनुसार जाति–भोग–आयु की व्यवस्था महत्वहीन हो जावेगी, जो ईश्वर की व्यवस्था है वह मनुष्य के हाथों में हो जावेगी फिर तो संसार का कोई भी व्यक्ति किसी बुरी योनि में जाएगा ही नहीं, पापी से पापी व्यक्ति भी उसके मृत्यु के पश्चात सद्गति को प्राप्त कर लेता है।

यह ठीक नहीं है कर्मफल ही संसार में लोक और परलोक की सिद्धी करवाता है। इसलिए धर्म पथ अपना कर इस लोक और परलोक की सिद्धी हो यही जीवन की सार्थकता है।

नादान इसे पाकर यूं ही गंवा देते हैं
पर बुद्धिमान इस जनम और उस जनम का कमा लेते हैं।

क्रमशः

आगे पढ़िये धर्म ही सबको संगठित करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

श्रद्धांजलि –

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान, गवेषक, इतिहासविद्, दयानन्द दीर्घा के प्रस्तुतकर्ता **प्रो0 डॉ0 कुशलदेव जी शास्त्री** का 8 जनवरी को कलकत्ता में बीमारी के कारण निधन हो गया। वे प्रामाणिक इतिहास लेखक थे और निरन्तर शोध कार्य में व्यस्त रहते थे। उन्होंने वर्षों तक परिश्रम कर "महर्शि दयानन्द – काल और कृतित्व" तथा डॉ0 आम्बेडकर और आर्य समाज' जैसे श्रेष्ठ इतिहास ग्रंथ लिखे। ऐसा महान पुरूषार्थी विद्वान् हमारे बीच अब नहीं रहा। परमात्मा उनके परिवारजनों को इस विपद वेला में धैर्य–शक्ति प्रदान करें – यही प्रार्थना है।

◆ आर्य समाज मन्दसौर के **प्रधान श्री मांगीलाल जी बसेर** का 85 वर्ष की आयु में असामयिक निधन दिनांक 4–2–2011 शुक्रवार को हो गया। आप मिलनसार, सेवाभावी और सौम्य व्यवहार से परिपूर्ण सभी के प्रिय रहे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये। उनकी शवयात्रा में अनेक नागरिकों ने हिस्सा लिया। मुक्तिधाम में उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गई। शोक सभा में सभी गणमान्य आर्यजनों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये और शोक संतृप्त परिवार को इस दुःख की घड़ी में ईश्वर साहस देवें।

चौधरी मित्रसेन जी

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, प्रबल अनुयायी और भामाशाह के नाम से प्रसिद्ध **चौधरी मित्रसेनजी** का रोहतक में निधन हो गया। चौधरीजी का जीवन सात्विक, धर्म परायण रहा। आप परोपकारिणी सभा के उपप्रधान पद पर वर्शों रहे। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति व परिवार को इस दुःख की घड़ी में साहस देवें।

0 मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सतत् प्रहरी, पूर्व अधिष्ठाता आर्य वीर दल के **मा0 बाबूलालजी आनन्द** का विगत माह जनवरी में देहान्त हो गया। आप जीवनभर एक बहुत ही लगनशील, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। आपकी शैक्षणिक सेवाओं के लिए आपको राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत हुए। आर्य समाज के लिए आपने पूरा जीवन समर्पित किया। ऐसी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि। सभी दिवंगत आत्माओं को आर्य समाज महू की ओर से श्रद्धांजलि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्साह वर्धक, व्यवस्थित, अभूतपूर्व
वेद प्रचार का आयोजन

आर्य समाज का कार्य वेदों का जन–जन तक प्रचार करना है। हमारा प्रयास सनातन धर्म के इस पवित्र सन्देश वेद को घर–घर तक पहुंचाने का है।

हमारे निमाड़ क्षेत्र में ऐसा ही हो रहा है अपने पर विश्वास ही नहीं होता है कि इतनी जनता आर्य समाज के इन जलसों में कैसे आ रही है। पढ़े–लिखे बेटे और बेटियों की संख्या इतनी ज्यादा है कि उन्हें देखकर मन गदगद हो जाता है।

इसका खास कारण है श्री प्रकाश जी आर्य की सूझबूझ और सरल से सरल बातों से समझाने का उनका तरीका। अनपढ़ से अनपढ़ औरतों ने भी ध्यान से सुना सच्चाई को समझा और कई महिलाओं ने वैदिक मान्यता के अनुसार ईश्वर को निराकार, उसका नाम ओ३म् और वह सब जगह है मानना स्वीकार किया, मूर्ति पूजा छोड़ दी। कार्यक्रम के अवसर पर ही चार नवयुवकों ने ग्राम मुल्ठान में आर्य समाज की सदस्यता ली, कुछ लोगों ने बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब, मांस सेवन का त्याग किया। मुल्ठान जहां 6 माह पूर्व ही प्रकाश जी व हमने मिलकर आर्य समाज की स्थापना की थी वहां पहलीबार आयोजित कार्यक्रम ने एक इतिहास ही बना दिया। भयंकर शीत लहर में भी हजारों की उपस्थिति रही। ग्राम नान्द्रा में हजारों श्रद्धालु ठण्ड के प्रभाव में सुनने आते रहे बहुत ही प्रभावी कार्यक्रम यहां सम्पन्न हुआ।

ग्राम कुआ एक ऐतिहासिक गांव बन गया। वैसे यहां निमाड़ का सबसे पहले आर्य समाज स्थापित हो चुका था, भवन भी बड़ा सुन्दर बना है। परन्तु पिछले 25–30 वर्षों से बिलकुल शिथिल हो गया था। मैंने श्री प्रकाश जी ने पुनः इस हेतु प्रयास किया और परिणाम अत्यन्त उत्साहजनक निकले। वहां विगत पिछला सम्मेलन ही इतना प्रभाव डाल गया कि इस वर्ष के लिए दान की घोषणा पिछले आयोजन में ही हो गई।

इस बार पहले से भी बड़ा आकर्षक पांडाल, मंच, बुक स्टॉल थी। इसका इतना प्रभाव हुआ कि 150 व्यक्ति यज्ञ में बैठे और अगले वर्ष के लिए फिर घोषणा कर दी गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

125 वर्ष पूर्व निर्मित गाड़ी के तम्बू पर डालने वाली छोलदारी (कपड़े की) का प्रदर्शन किया जिसमें वैदिक संध्या कपड़े पर लिखी हुई है।

कार्यक्रम में योग–प्राणायाम, यज्ञ, वेदकथा, भजन, व्याख्यानमाला का नित्य आयोजन हुआ। श्री दक्षदेव गौड़ के निर्देशन में अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने योग–आसन का प्रदर्शन कर सबको आश्चर्य चकित कर दिया।

तीनों स्थान के कार्यक्रमों में अनेक विद्वान पधारे जिनमें श्री डॉ. विनय चिद्यालंकार–उत्तराखण्ड, डॉ0 आचार्या सुनीति आर्या–देहली, डॉ0 सुधा आर्य–देहली, श्री सुरेश शास्त्री–बरेली, श्री राजेन्द्र व्यास,– उज्जैन, श्री काशीराम अनल–कानड़, श्री रूहेलसिंह–हरियाणा, श्री दिनेशदत्त – बिजनौर, श्री शितेष आर्य आदि थे। **बालकृष्ण आर्य** – उप मन्त्री इन्दौर संभाग

वेद रथ के माध्यम से प्रचार

वेद प्रचार समिति के द्वारा चलित वेद रथ से निरन्तर प्रचार कार्य चल रहा है।

उन ग्रामीण क्षेत्रों में जहां वैदिक विचारधारा को नहीं पहुंचा सके, उन स्थानों पर भी, प्रवचन, फिल्म प्रदर्शन और साहित्य एवं पं0 अमरसिंह, सुरेश शास्त्री, भजनोपदेशक दिनेशदत्त, हरिओम जी द्वारा भी सनातन संस्कृति के विचार का प्रचार हुआ।

वेद रथ के साथ योग प्रशिक्षक श्री तुलसीराम आर्य सपत्निक व समय–समय पर उपदेशक जा रहे हैं।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ में एक माह के लिए वेद रथ प्रचार हेतु आमन्त्रित कर प्रचार हो रहा है। अन्य प्रान्तो से भी रथ की मांग की जा रही है। प्रधान श्री गोविन्द आर्य, मन्त्री श्री रमेश गोयल तथा श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री अरूण आर्य, श्री बालकृष्ण आर्य, श्री डालूराम आर्य द्वारा निरन्तर प्रचार–प्रसार योजना बनाकर करवाया जा रहा है।

समिति के पंजीयन की कार्यवाही की जा चुकी है, समिति विवादास्पद होकर संचालन में असमर्थतता होने पर समिति पर अन्तिम अधिकार मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का है।

समिति में कोई भी सहयोगी सदस्य के रूप में अपना नाम दे सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण –

श्री वी. डी. ज्ञानी–इन्दौर (संरक्षक), श्री प्रकाश आर्य–महू (संरक्षक), श्री भगवानदास आर्य–रतलाम (संरक्षक), श्री राजेन्द्र व्यास–उज्जैन (संरक्षक), श्री बालकृष्ण आर्य–कसरावद (संरक्षक), **प्रधान** – श्री गोविन्द आर्य – देपालपुर, श्री अरूण आर्य – राउ (उप प्रधान), श्री रमेशचन्द्र गोयल–इन्दौर (मन्त्री), श्री दिनेश पाटीदार – कुआ (उप मन्त्री), श्री महादेव आर्य – कसरावद (उप मन्त्री), श्री मुरारीलाल पांचाल – महू (कोषाध्यक्ष), श्री गणेशसिंहजी–महू (स्टोर कीपर)।

समिति के संस्थापक सदस्यों के नाम – श्री अश्विनी शर्मा–महू, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल–उज्जैन, श्री काशीराम अनल–कानड़, श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार–मौलाना, श्री सन्तोष पटेल–धार, श्री डालूराम आर्य–नान्दरा, श्वेतकेतु वैदिक–इन्दौर, श्री हरिशंकर शर्मा–महू, श्री तुलसीराम आर्य–महू, श्री रामलाल प्रजापति–महू, श्री नन्दराम सोमात्रे–राउ, श्री रामनारायण आर्य –राउ, श्री राजेन्द्र कुमार पाटीदार–रंगवासा, श्री दक्षदेव गौड़–इन्दौर, श्री दिनेश गुप्ता–इन्दौर, श्री मनोज स्वर्णकार – नीमच, प्रतापसिंह आर्य – इन्दौर, अजय आर्य – इन्दौर, चैनसिंह आर्य –इन्दौर, श्री सुरेश सोनी – इन्दौर, श्री लाखनसिंह ठाकुर–धार, श्री दुर्गाशंकर पाटीदार–कुंआ, श्री गंगाराज आर्य–कुंआ, श्री महेश प्रजापति–सनावद, श्री वेदप्रकाश आर्य–उज्जैन, विजय कुमार मालवीय–इन्दौर, लक्ष्मीनारायण सुले–राउ।

आर्यजनों से निवेदन है कि, प्रचार हेतु सम्पर्क करें।

प्रधान – गोविन्द आर्य, वेद प्रचार समिति

सत्संग

आर्य समाज मन्दिर महू में प्रतिदिन यज्ञ प्रातः 7 से 8 व प्रत्येक रविवार प्रातः 8 से 10 बजे सत्संग जिसमें यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन होता है।

बुक-पोस्ट

श्रीमान्

सम्पादक, प्रकाशक द्वारा मुद्रक : प्रकाश आर्य कृतें आर्य सेवा संघ, महू के लिये चौधरी प्रिंटर्स, महू से मुद्रित व प्रकाशित, संपादक मंडल : रामलाल शास्त्री, विद्याभास्कर आचार्य संजय देव, कुमारी निधि शर्मा, आर्य समाज, महू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi